।। णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।।
।। आयओ गुरुबहुमाणो ।।

# લેટર્સ

## રાજકીય - પત્રપ્રેરણા

**પ્રિયમ્**


અહો શ્રુતમ્
શા. બાબુલાલ સરેમલજી
સિદ્ધાચલ બંગ્લોઝ, હીરા જૈન સોસાયટી,
સાબરમતી, અમદાવાદ-૩૮૦૦૦૫. મો. ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪
ahoshrut.bs@gmail.com
કારતક, વિ. ૨૦૭૭

॥ अर्हम् ॥

નૂતન વર્ષ, વિ.૨૦૭૧

મુનિ            તરફથી

આદરણીય પ્રધાનમંત્રી શ્રી નરેન્દ્રભાઈ મોદી યોગ્ય
ધર્મલાભ,

નૂતન વર્ષના મંગળ પ્રભાતે
આપશ્રીને અંતરના અનરાધાર આશિષ.
આપશ્રીના સંસ્કાર-સંસ્કૃતિ રક્ષાના
સર્વ કાર્યોની હાર્દિક અનુમોદના.
આપશ્રીને એક લાગણીભરી વાત કરવી છે.
'સ્વચ્છ ભારત'ના મિશન દ્વારા
ભારતના ગલી ગલીને ચોક્ખી ચટ્ કરી દેવાની
સફળ કામગિરી આપશ્રીએ કરી.
આ મિશન બાહ્ય સ્વચ્છતા પૂરતું જ કેમ સીમિત રહે?
ભારતીય સંસ્કૃતિમાં બાહ્ય સ્વચ્છતા કરતા પણ
આંતર સ્વચ્છતાને અનેક ગણું મહત્ત્વ અપાયું છે.
પુરાણોમાં કહ્યું છે.
स स्नातो यो दमस्नातः स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।
જેણે ઈન્દ્રિયો અને મનની અપવિત્રતાને ધોઈ નાંખી,
એણે ખરું સ્નાન કર્યું છે,
એ બહાર પણ પવિત્ર છે ને અંદરથી પણ પવિત્ર છે.
નરેન્દ્રભાઈ !
કેમ એવું ન થઈ શકે કે દરેક ભારતીયના
મનની ગલીઓ પણ સ્વચ્છ થઈ જાય? જો-
(૧) સમસ્ત પ્રસાર માધ્યમોમાંથી અશ્લીલતા નાબૂદ કરી દેવાય,
(૨) શિક્ષણમાં નૈતિકતા, સદાચાર, સુશીલતા-ના પાઠો ઉમેરાય,
(૩) પ્રસાર માધ્યમો પણ આ પાઠો અવશ્ય ભણાવે એવો
કાયદો કરવામાં આવે, જેથી મુવી, ચેનલ્સ વગેરે
દ્વારા પણ આ જ સદ્ગુણોને ઘૂંટવામાં આવે.
તો આ કાર્ય સાવ જ સરળતાથી થઈ શકે તેમ છે.
આ કાર્યમાં પ્રભુકૃપાથી આપશ્રીને ખૂબ ખૂબ
સફળતા મળે એવા આશીર્વાદ સહ -      ના ધર્મલાભ

॥अर्हम्॥ નૂતન વર્ષ, વિ.૨૦૭૧

મુનિ ... તરફથી

ગરિમાધર ગુજરાતના મુખ્યમંત્રી

આદરણીય શ્રી વિજયભાઈ રૂપાણી યોગ્ય

ધર્મલાભ,

દેવ-ગુરુ પસાયે આનંદ-મંગળ વર્તે છે,

આપશ્રી પણ કુશળ હશો.

આપશ્રીના જેવા જૈનધર્મી અને ધર્મપ્રેમી

મુખ્યમંત્રીને જોઈને

અમારી છાતી ગજ ગજ ફૂલે છે.

ધર્મ-સંસ્કૃતિ-દેશ રક્ષાના

અગણિત કાર્યો આપશ્રીએ કર્યા છે,

લાખો અબોલ જીવોની દુઆઓ લીધી છે.

કેટલાય સંકટોમાંથી પ્રજાને ઉગારી છે,

અપાર પરિશ્રમ લઈને પણ

કપરી જવાબદારીઓ નિભાવી છે.

નૂતન વર્ષની મંગળ પ્રભાતે

આપશ્રીને અમારા અંતરના ય અંતરથી એવા

અનરાધાર આશિષ છે,

કે અનંત તીર્થંકરોની કૃપાથી પ્રભુ મહાવીરસ્વામીના પ્રસાદથી

આપશ્રીની આ સાત્ત્વિક શક્તિના ગુણાકારો થાય,

આપશ્રી નવા વર્ષે

આથી પણ અનેકગણા

જનકલ્યાણ અને આત્મકલ્યાણના કાર્યો કરો

અને

સમગ્ર ગુજરાતમાં આનંદ-મંગળનું

એકછત્રી સામ્રાજ્ય ખડું કરો.

હાર્દિક શુભેચ્છાઓ

અને ખુબ ખુબ આશિષ સહ

- ના ધર્મલાભ

॥ अर्हम् ॥

मुनि की ओर से

नूतन वर्ष,
वि. २०७१

समस्त पत्रकार महोदयों को

धर्मलाभ ।

नूतन वर्ष की असीम शुभकामनायें ।

ज्ञानप्रसार के आप के सत्पुरुषार्थों की

मैं हार्दिक अनुमोदना करता हूँ ।

इस युग में सर्वोच्च शक्ति आपकी है ।

आप जो चाहे वह कर सकते हैं ।

भगवान श्रीमहावीरस्वामीजी कहते हैं

कि शक्ति से भी ज्यादा मूल्य है दृष्टि का ।

पंछी के पँख शक्ति होते हैं,

पँछी की आँखे दृष्टि होती हैं ।

दृष्टिविहीन शक्ति खतरनाक होती है,

स्वयं के लिये भी, अन्यों के लिये भी ।

एक दिल की बात कहूँ ?

जो बात लिखने के लिये

आपकी अंदर की आवाज़ ना कह रही हो

ऐसी बात कभी न लिखे ।

अंदर की आवाज़ भगवान की आवाज़ होती है ।

आप कुछ भी लिखने से पहले इतना सोचे

कि क्यों मेरी माँ इससे खुश होगी ?

और यह मेरी बेटी से छिपाना तो नहीं पडेगा ना !

भगवान, माँ और बेटी -

इन तीन को नज़र के सामने रख कर

जो भी लिखा जायेगा, वह अमृत बन जायेगा ।

आपकी दृष्टिपूर्ण शक्ति

इस मुरझा रही सृष्टि की संजीवनी बन जाये,

ऐसी हार्दिक शुभेच्छाओं के साथ

- का धर्मलाभ

॥अर्हम्॥

નૂતન વર્ષ
વિ. ૨૦૭૭

મુનિ ગચ્છિ તરફથી

ગરવા ગુજરાતના સમસ્ત મન્ત્રીવર્યો
તથા વિધાનસભ્યો યોગ્ય ધર્મલાભ.
નવા વરસની સ્વર્ણિમ પ્રભાતે
આપ સૌને સુખ-શાંતિ-આરોગ્ય
અને સદ્ગુણોની અગણિત શુભેચ્છાઓ.
ગુજરાતની ત્રણ મુખ્ય અસ્મિતાઓ છે-

(૧) કરુણા.
(૨) પવિત્રતા.
(૩) પરોપકાર.

ભારતભરની અંદર
આ ત્રણ ગુણોમાં ગુજરાત મોખરે છે,
આજે અમારા જેવા સંતોના હૃદયમાં
એ આઘાત છે
કે આજે ગુજરાતની આ અસ્મિતાઓ
ભૂંસાઈ રહી છે.
આપશ્રી જેવા સજ્જનો સત્તાના સિંહાસને
બિરાજમાન હોય,
ત્યારે કેમ એવું ન થઈ શકે
કે ગુજરાતની આ અસ્મિતાની સુરક્ષા થાય?
ખરેખર, આપશ્રી આ કાર્ય કરવા માટે
ખુબ ખુબ સક્ષમ છો.
જો

(૧) સમગ્ર શિક્ષણતંત્રમાં આ ત્રણ ગુણો પર ખુબ ભાર મુકાય.
(૨) સમગ્ર પ્રસાર માધ્યમોમાંથી અશ્લીલતા, હિંસા વગેરે
બદીઓને નાબુદ કરી દેવાય.
(૩) સમગ્ર પ્રસાર માધ્યમો પર આ ત્રણ ગુણોને ફેલાવવા
માટે ફરજ પાડવામાં આવે,

તો આ કાર્ય ખુબ સરળતાથી થઇ શકે તેમ છે.
પ્રભુકૃપાથી આપશ્રીના વરદ હસ્તે
આ કાર્ય શીઘ્ર સાકાર થાય એવા આશિષ સહ
– -ના ધર્મલાભ.

॥अर्हम्॥

नूतन वर्ष - वि. २०७१

मुनि गति की ओर से

आदरणीय संसद सभ्यों को धर्मलाभ - शुभाशिष।

नूतन वर्ष की इस मंगल प्रभात को

आप को अनगिनत शुभकामनायें।

आप के देशप्रेम एवं संस्कार सुरक्षा के

आप के प्रयासो की मैं अंतरमन से

अनुमोदना करता हूँ।

आज के दिन मैं आपको मेरे दिल की कुछ

बात बताना चाहता हूँ।

नया साल आया है और चला जायेगा।

समय नये को पुराना बना देता है।

इसी तरह आप का सत्तासमय और जीवनसमय

भी शाश्वत नहीं है।

कल न कुर्सी रहेगी न जीवन भी रहेगा।

जब तक जीवन है और कुर्सी है,

तब तक क्यों न कुछ ऐसा करें?

जिससे अंत समय में हमें हमारे किये

पूर्ण संतोष हो, हमारे माता-पिता हम पर गौरव ले,

हमारे भगवान हम पर कृपा बरसाये,

हाँ, आप चाहे तो ऐसा अवश्य कर सकते हैं,

जैसे कि -

(१) अहिंसा परमो धर्मः - इस सूत्र की समस्त देश में प्रतिष्ठा हो।

(२) समग्र शिक्षा - पाठ्यपुस्तकों में प्रेम और करुणा जैसे सद्गुणों के पाठों का प्रवेश हो।

(३) प्रत्येक भारतीय के मन में हिंसा का विचार ही नाबूद हो जाये, ऐसा प्रयास प्रसार माध्यमों से किया जायें।

भारत सद्गुणों से ही स्वर्ग बन पायेगा।

आप शीघ्र ही ऐसे स्वर्ग का सृजन करें ऐसे

हार्दिक आशीर्वाद सह - - का धर्मलाभ

प्रति
आदरणीय श्री प्रकाशभाई जावडेकर,
केन्द्रीय मन्त्री,
सूचना एवं प्रसार मन्त्रालय

धर्मलाभ शुभाशिष सह,
भारतीय संस्कृति को पुनः उज्जागर करने हेतु
आप अपने अंतरमन से प्रयत्नशील है
उसकी मैं अनन्य अनुमोदना करता हूँ।
आप जैसे देशभक्त के लिये हमें गौरव है,
एवं स्वर्णिम भारत की हमारी अनगिनत
आशाओं के आधार भी
आप जैसे महापुरुष ही है।
खास,
OTT - मीडिया के नियमन के विषय में
आप सत्प्रयास करने जा रहे है,
और मीडिया Adults के लिये हर तरह से
नियमन-मुक्त बनना चाहता है,
तब कुछ महत्त्वपूर्ण बातों के प्रति
मैं आपका ध्यान खिंचना चाहता हूँ।

(१) यदि Adults के लिये भी Green-Signal
दे दी गयी - तो नाबालिग व्यक्ति भी उसके
संपर्क में आयेगा ही, यत: जैसे ट्राफिक पोलिस
बच्चों को 2 wheeler/4 wheeler चलाने से

रोक सकती है, वैसा इस में सम्भव नहीं। बच्चे भी किसी न किसी तरह लायसन्स पा लेंगे एवं उन का जीवन बचपन में ही भ्रष्ट हो जायेगा। OTT - मीडिया से स्कूल-कोलेज का रिज़ल्ट बहुत ही गिर जायेगा यह निश्चित है।

(२) OTT - मीडिया में गंदी गालियाँ गटर-नालियों की तरह बहती रहती है, जो १८ से अधिक वय की व्यक्ति के लिये भी सुनना उचित नहीं है। बार बार ऐसा सुनने से व्यक्ति अपने परिवार में / समाज में भी ऐसा बोलने लगता है, जिस से पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याएं निश्चित रूप से बढ़ने-वाली है।

(३) अश्लीलता किसी भी उम्र में खतरनाक होती है। यह मानव-मन की दुर्बलता है कि ऐसे चित्र / चलचित्र उसके मन में हावी हो जाते है, वह बार बार वही देखना चाहता है, वह रात को १/२/३ बजे तक सोता नहीं, वह नहीं भी देख रहा होता तब भी उसका मन वही देख रहा होता है। OTT मीडिया तो इस दुर्बलता का फायदा उठाकर TRP बढ़ाकर Adds से अरबो रूपया बना लेगा, पर उसका दर्शक अपना नौकरी या धंधे का कार्य उचित रूप से नहीं कर पायेगा. उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी होगी, दिमाग

सड गया होगा, उसे रात को आराम नहीं मिला होगा, अतः वह काम के समय आराम करेगा, या जगते हुए भी उसे काम करने के लिये आवश्यक स्वस्थता ही नहीं मिलेगी। फलस्वरूप देश में प्रतिदिन अरबों रूपयों का नुकशान होगा।

(४) इसके फलस्वरूप महेंगाइ बढेगी।

(५) OTT दर्शक को नौकरी से निकाल दिया जायेगा, जिससे प्रतिदिन बेरोजगार लोग लाखों की संख्या में बढते जायेंगे।

(६) OTT दर्शक का धंधा टूट जायेगा, उसके धंधे से जुडे हुए और भी धंधे टूट जायेंगे। कोरोना से लूटा हुआ भारत का बाजार OTT मीडिया की वजह से उत्तरोत्तर लूटता ही जायेगा।

(७) नौकरी-धंधे टूटने के बाद लोग अपराधवृत्ति एवं व्यसनों की ओर मुडेंगे, देश की समस्याए, गुनाह, परेशानियाँ सब लाखो-गुना बढ जायेगा।

(८) OTT-मीडिया से Adults के भी यौन-अपराध बढते जायेंगे। आये दिन ५-७ साल की बच्ची से लेकर ७७ साल की वृद्धा के

साथ हुए दुष्कर्म की खबरें अखबारों में छपती रहता है। यदि हम इसे अपराध मानते है तो OTT-मीडिया महा महा महा अपराध है, यतः उस से मानव की बुद्धि भ्रष्ट हो जायेगा और अपराधों की संख्या कारखों-गुना बढ़ जायेगा।

Adults भगवान नहीं है, वे भी मानव ही है, जो सज्जन होते हुए भी निमित्तों के अधीन होते है, अपने आप पर का काबु गवा देते है, और फिर कुछ भी कर बैठते है।

(९) अपनी बेटी / पोता / पुत्रवधू / भाभी के साथ दुष्कर्म कर बैठनेवाले भी Adults ही होते है, जिस में वास्तव में दोष कुनिमित्त का होता है। दुष्कर्म करने वाले का विरोध सारा देश करता है, पर उस से भी कारगुना विरोध पोर्नोग्राफी, अश्लील साहित्य, अश्लील चित्र / चलचित्र का होना चाहियें, यतः अपराधों की जड वही है।

(१०) Adults के लिये भी मीडिया को मुक्ति देने से विवाहसंबंध टूटेंगे, घरेलू हिंसायें बढ़ेगा, डिवोर्स-केस हजारोगुना बढ़ेंगे। संताने अनाथ होगी। जनजीवन मुश्किल हो जायेगा।

(११) भारत के प्राचीनतम धर्म हो या भारत में

बाहर से आये हुए धर्म हो, एक भी धर्म OTT-मीडिया को सही नहीं कहता। सभी धर्मशास्त्र उसके विरोध में ही खड़े है। गीता / वेद / पुराण / रामायण / महाभारत / आगम / त्रिपिटक / बाइबल / कुरान - सब के सब अश्लीलता / दुश्चरित्रता / गालियाँ - इन सब का विरोध करते है। OTT मीडिया धार्मिक संवेदनाओं का हनन करता है।

(१२) भारतीय संस्कृति के साथ इस मीडिया का बिलकुल मेचिंग नहीं है। संस्कारी - लज्जाशील - मर्यादाशील भारतीय जनजीवन को यह मीडिया अस्त-व्यस्त एवं हत-प्रहत कर देनेवाला है। जो भारत के लिये कभी भी स्वीकार्य नहीं हो सकता।

(१३) कोइ बेटा नहीं चाहता की उसके मा-बाप ऐसा देखे / सुने। कोइ मा-बाप नहीं चाहते के उनके छोटे या बड़े संतान ऐसा देखे / सुने। आप जैसे कोइ भी समजदार व्यक्ति समझ सकते है कि यह सब गंदा है, इसका प्रसार गंदगी का ही प्रसार है, जो इस देश को आर्थिक - पारिवारिक - सामाजिक - सांस्कृतिक - हर तरह से बरबाद कर देगा।

(१४) मजबूत विवाहसंबंध परिवार की नींव होता

है, मजबूत परिवार समाज की नींव होती है एवं मजबूत समाज राष्ट्र की नींव होती है।

विवाहसंबंध का मूल होता है- परस्पर का विश्वास एवं वफ़ादारी। दुनिया की कोई पत्नी नहीं चाहती की उसका पति परस्त्री को देखे। खास, जब वह दुःस्थिति में हो - वस्त्रविहीन हो, तब तो उसे न ही देखे। भारतीय मनःस्थिति में तो यह भावना दृढ़ स्वरूप से होती है। ऐसा ही अपेक्षा हर पति भी अपनी पत्नी के लिये रखता है।

OTT मीडिया इस विश्वास एवं वफ़ादारी को निश्चित रूप से तोड़ देगा। फलतः विवाहसंबंध टूटेगा, फलतः समाज टूटेगा, फलतः देश टूटेगा। विदेशों में जिन हेतुओं से पारिवारिक जीवन खत्म हो गया है, उन हेतुओं को हमें आमन्त्रित क्यों करना चाहिये? परिवार में केवल परिवार ही नहीं होता - देश का शारीरिक - मानसिक - सामाजिक और आर्थिक स्वास्थ्य भी होता है।

हमारा आप से दर्दभरा अपील है की आप मीडिया के लिये कड़ी से कड़ी सेन्सरशीप लाये, जो किसी भी उम्र की व्यक्ति को लागू होती हो। बात केवल OTT मीडिया की नहीं है, कोई भी प्रिन्ट मीडिया, टी.वी. चेनल्स, सोशियल मीडिया, इन्टरनेट

सब की बात है। जैसे जैसे ~~मा~~ मीडिया की अश्लीलता बढती जा रही है, वैसे वैसे हमारा देश अनेक विधा से लूटता जा रहा है, और साथ ही साथ देश का आर्थिक नुकशान भी बढता जा रहा है।

क्यों कुछ लोग के जेब भरने के लिये पूरे देश का इतना बड़ा नुकशान होने देना उचित है?

आज देश के हित के लिये मीडिया से यह अपेक्षित है कि वह नैतिकता, प्रामाणिकता, सदाचार, चरित्रसम्पन्नता आदि सद्गुणों का प्रसार करे, परस्त्री मात समान एवं परधन पत्थर मानीए जैसे आदर्शों का प्रसार करे, मातृभक्ति, पितृभक्ति, वफादारी एवं देशभक्ति का प्रसार करे, उसके बजाय मीडिया पूरा उल्टा प्रचार कर रहा है, जिस पर आप जैसे सज्जन मन्त्रीयों का नियंत्रण एवं सही दिग्दर्शन अति अति आवश्यक बन गया है।

हम हृदय की उम्मीदों के साथ आप से विज्ञप्ति करते है। आप मीडिया को सुसंस्कारी बनायें, भारत की १३५ करोड़ के जनता के सुसंस्कारों का दायित्व आप पर है, हम जैसे हज़ारो संतो की दृष्टि भी आप पर है। परमात्मा की कृपा से आपको इस कार्य में शतमुख सफलता मिले ऐसे आशिष।

## स्वच्छ साइबर भारत मिशन द्वारा
## भारत के हर सांसद को भेजने में आया एक दर्द भरा पत्र.....

गुजरात - अमदावाद में स्थित युवा जागरण मंच ने बेरोकटोक और बेलगाम चल रही पोर्नोग्राफी (अश्लील साहित्य / ऑडियो - वीडियो) और OTT Media – Web Series के भयंकर दुष्परिणामों के सामने गंभीर प्रश्न उठाये हैं।

भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम शास्त्रों में स्पष्ट विधान है कि

न नगनो स्त्रीयभीक्षेत। - कभी भी किसी नग्न स्त्री को नहीं देखना।

इस विधान के बहुत सारे वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक कारण हैं। भारतीय संस्कृति मानवसमाज और मानवस्वभाव के शत प्रतिशत अनुकूल है। विदेशों में परिवार जैसी कोई वस्तु क्यों नहीं है? क्या वहां परिवार बनते नहीं, और बनते हैं तो टिकते नहीं? क्यों वहां के मानव अंदर से टूट जाते हैं और डिप्रेशन (अवसाद) में स्वतः ही झोंक जाते हैं? क्यों वहां पागलों की संख्या ज्यादा है? कारण यही है कि वहां की परिस्थिति मानवसमाज और मानवस्वभाव के अनुकूल नहीं है। नग्नता के साथ पशु जी सकते हैं, मानव नहीं। अश्लील प्रसार माध्यम मानव की बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है, और बुद्धि के भ्रष्ट होते ही मानव का सत्यानाश भी निश्चित हो जाता है। भगवद गीता स्पष्ट कहती है - बुद्धि नाशात प्रणश्यति।

पोर्नोग्राफी और ओ टी टी मीडिया के आक्रमण से भारत का युवाधन शरीर और मन दोनों से बुरी तरह घायल होगा। भारत के अर्थतंत्र को मारक चोट लगेगी। परिवार टूट जाएंगे, समाज बिखर जाएंगे और पूरे देश का ऐसा नुकसान होगा, जो कभी न भरा जा सकेगा।

ये माध्यम देश के करोड़ों लोगों को गंदी और अश्लील हरकतें सिखा रहे हैं, बहुत ही गंदे डायलॉग ( संवाद) सिखा रहे हैं, और नीच से नीच व्यक्ति करे ऐसे व्यभिचार सिखा रहे हैं। "परस्त्री माता समान" के आदर्शों को तार तार कर उड़ा रहे हैं। भारतीय संस्कृति की खुल्ले आम हत्या कर रहे हैं। जो प्रवृत्ति हिन्दू, मुस्लिम, जैन, सिख, ईसाई, बौद्ध वगैरह प्रत्येक धर्म और प्रत्येक समाज को हरगिज मंजूर नहीं, तो वो इस प्रकार बेलगाम और अंधाधुंध तरीके से कैसे चल सकता है?

यही वेदना और देशरक्षा की भावना के साथ युवा जागरण मंच ने प्रत्येक सांसद को जो पत्र भेजा है, वो अक्षरशः यहां प्रस्तुत है।

प्रति,

आदरणीय संसद सभ्य

भारत

विषय: भारतीय जनता का सर्वनाश कर देने समर्थ ऐसी पोर्नोग्राफी - OTT मीडिया Web - Series वगैरह पर प्रतिबंध लगाने के लिये दर्दभरा अनुरोध

माननीय संसद सभ्य।

प्रणाम, आप कुशल मंगल होंगे।

भारत की 135 करोड की जनता के कुशलमंगल के लिये आप प्रयत्नशील है, अतः हम आपकी हार्दिक अनुमोदना करते है।

आज समस्त भारत के सज्जनो की ओर से हम आप से एक विनाशक आक्रमण की बात करने जा रहे है।

दुनिया के कई देशो में पोर्नोग्राफी एवं अभद्र अश्लील प्रसार माध्यमो पर संपूर्ण प्रतिबंध है, तो हमारा देश तो संस्कार, सदाचार, संस्कृति एवं सुशीलता के विषय में विश्वगुरु है, तो हमारे देश में बेरोकटोक यह सब कैसे चल सकता है?

यह मर्यादापुरुषोतम श्रीराम का देश है। जिन्होंने युद्ध करके भी शील की रक्षा की थी। यह भगवान श्रीकृष्ण का देश है, जिन्होने द्रौपदी के वस्त्राहरण निक्कल बनाया था, यह वेदों, पुराण, उपनिषदो, आगमों एवं रामायण - महाभारत जैसे पवित्र ग्रंथो का देश है, जिस में शीक एवं सदाचार का महिमा गाया गया है। अरे, कुरान में भी नारी के इस तरह वस्त्रविहीन, अभद्र स्थिति में बिलकुल मान्य नहीं किया गया है।

**यह पोर्नोग्राफी सही है तो राम मंदिर गलत साबित होगा, यदि WEB SERIES उचित है तो वेंदो और पुराणों अनुचित मानने होंगे, यदि OTT मीडिया में कुछ भी गलत नहीं है। तो**

**कुरान पर पुनःविमर्श करना होगा, जिस के लिये इस देश की जनता मरते दम तक सम्मत नहीं है।**

सवाल केवल धार्मिकता का ही नहीं है, इस प्रकार यदि संपूर्ण प्रतिबंध नहीं लाया गया तो परिवार तूट जायेंगें, पवित्र संबंधो - जैसे मा - बाप, पिता - पुत्री, भाई - बहन, देवर - भाभी वगैरह का सत्यनाश हो जायेगा, समाज तूट जायेगा और देश भी तूट जायेगा।

खून, बलात्कार, कोर्ट केस पुलिस केस आदि की संखया लगातार बढती जायेगी। अभद्रता के सतत संपर्क में रहने से दिमाग और शरीर दोनो का व्यय हो जाते है, जिसका असर भारत के अर्थतंत्र पर अवश्य होगा - अरबो अरब रूपयें का नुकसान होगा।

**भारतीय संस्कृति, पारिवारिक जीवन, सामाजिक स्थिरता एवं अर्थतंत्र पर यह एक जानलेवा हमला रहा है, जिसे बचाने का दायित्व आप जैसे महारथी के कंधे पर है।**

आप केवल एक दो संतान के माता - पिता नहीं हो, समस्त भारतीय जनता के आप माता - पिता है, आप कभी नहीं चाहोंगो कि आपकी संतान ऐसे प्रसार माध्यम के संपर्क में आये। बल्कि शालीन और संस्कारपूर्ण द्रश्य - श्राव्य के ही संपर्क में आये, ऐसा ही आप चाहते हो। **तो समस्त भारतीय जनता भी आप की ही संतान है, उनके लिये भी आप यही चाहेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।**

आप अपनी पूरी ताकात के सब इस आक्रमण को परास्त करे एवं भारतीय जनता के परिवार, समान, सुख - शांति एवं अर्थतंत्र को बचा के ऐसी विनंती के साथ .....

आपके समर्थन की प्रतिक्षा में

आप का आभारी

## સ્વચ્છ સાયબર ભારત - મિશન દ્વારા
## ભારતના દરેક સંસદસભ્યને મોકલવામાં
## આવ્યો એક દર્દભર્યો પત્ર

ગુજરાત અમદાવાદના ખાતે આવેલ યુવા જાગરણ મંચે બેરોકટોક ચાલી રહેલ પોર્નગ્રાફી અને OTT મીડિયાના ભયંકર દુષ્પરિણામો સામે ગંભીર પ્રશ્ન ઉઠાવ્યો છે.

ભારતીય સંસ્કૃતિના પ્રાચીનતમ શાસ્ત્રોમાં સ્પષ્ટ વિધાન છે -

न नग्नां स्त्रियमीक्षेत ।

કદી પણ કોઈ નગ્ન સ્ત્રીને ન જોઈ શકાય

આ વિધાનના ઘણા બધા વૈજ્ઞાનિક અને મનોવૈજ્ઞાનિક કારણ છે. ભારતીય સંસ્કૃતિ માનવસમાજ અને માનવ સ્વભાવ તદ્દન માફક છે. વિદેશમાં પરિવાર જેવી વગેરે કેમ નથી ? કેમ ત્યાં યા પરિવાર બનતા નથી ને બંને છે તો ટકતા નથી ? કેમ ત્યાં માણસ અંદરથી તૂટી જાય છે. ને ડિપ્રેશનમાં ધકેલાઈ જાય છે ? કેમ ત્યાં પાગલોના સંપર્ક વધારે છે ? કારણ એ જ છે કે ત્યાંની પરિસ્થિતિ માનવસમાજ અને માનવ સ્વભાવને અનુકૂળ નથી, નગ્નતા સામે પશુઓ જીવી શકે, માનવ નહીં, અશ્લીલ પ્રસાર માધ્યમો માણસની બુદ્ધિને ભ્રષ્ટ કરી નાખે છે, ને બુદ્ધિ જાય એટલે માણસનો સત્યાનાશ નક્કી જ હોય છે. ભગવદ્ગીતા સ્પષ્ટ કહે છે - बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ।

પોર્નોગ્રાફી અને OTT મીડિયાના આક્રમણથી ભારતનું યુવાધન શરીર અને મન બંનેથી પાયમાલ થઈ જશે, ભારતના અર્થતંત્રને મરણાતોલ ફટકો પડશે, પરિવારો તુટી જશે, સમાજો પડી ભાંગશે, અને આખા દેશને કદી ભરપાઈ ન થઈ શકે એવું નુકશાન થશે.

આ માધ્યમો દેશના કરોડો લોકોને ગાળાગાળી શીખવી રહ્યા છે, તદ્દન ગંદા ડાયલોગ્સ શીખવી રહ્યા છે, તદ્દન નીચ વ્યક્તિ પણ કરે એવા વ્યભિચારો શીખવી રહ્યા છે, પરસ્ત્રી માન સન્માનના આદર્શોને લીરેલીરા ઉડાવી રહ્યા છે. ભારતીય સંસ્કૃતિની ખુલ્લેઆમ હત્યા કરી રહ્યા છે, જે પ્રવૃત્તિ હિન્દુ, મુસ્લિમ, જૈન, શીખ, ઈસાઈ, બૌદ્ધ વગેરે પ્રત્યેક ધર્મ અને પ્રત્યેક સમાજને હરગીઝ મંજૂર નથી. તે આ રીતે બેફામ શી રીતે ચાલી શકે ?

આજ વેદના અને દેશરક્ષાની ભાવના સાથે યુવા જાગરત મંચે પ્રત્યેક સંસદ સભ્યને જે પત્ર મોકલ્યો છે, તે અહીં અક્ષરશ: પ્રસ્તુત છે.